माउंट आबू, 22 मई। प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साइंस एण्ड इंजिनियरिंग विंग द्वारा ''अनिश्चितता में चुनौतियों का सामना'' विषय पर चार दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार का उद्घाटन करते हुए इस विंग की अध्यक्षा बी.के.सरला दीदी ने कहा कि जब व्यक्ति विपतियों से घिरा होता है तो उसका विश्वास परमात्मा पर से उठ जाता है। और व्यक्ति आत्महत्या करने की बात सोचने लगता है। जबकि हमारा राजयोग यह सिखता है कि हम अनिश्चित परिस्थितियों में भी हम चुनौतियों का सामना कैसे करें, कैसे अपने आप को सुदृढ़ बनाये।

साइंस एण्ड इंजिनियरिंग विंग के नेशनल क्वाडिनेटर बी.के.मोहन सिंघल ने कहा कि परिस्थितियां हमें परेशान नहीं करती है बल्कि हम परिस्थितियों से परेशान हो जाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि हमारे मन में सौहार्द की भावना हो और हमारा संबंध उस परमसत्ता से हो जो ज्ञान का सागर है। हमारा मन ही उस परमसत्ता से संबंध स्थापित कर सकता है।

आर.के.चौहान, मुख्य अतिथि, जो कि थर्मल पावर से पिछले 35 वर्षो से जुड़े हुए हैं। आप सिंगरौली थर्मल पावर से भी जुड़े हुए हैं। इस अवसर पर कहा कि जब से मनुष्य जन्म लेता है तब से वह अपने जीवन में अनिश्चितताओं से जुड़ा रहता है। आज का मार्केट, हमारा जीवन या कहें कि आज के समय में सभी कुछ अनिश्चता से जुड़ा हुआ है।

उन्होंने आगे कहा कि हर अनिश्चितता से एक फेथ से जुड़ी होती है, और फेथ से विश्वास जुड़ा होता है और विश्वास मेडिटेशन से जुडा होता है। हम आज के समय में मेडिटेशन के द्वारा ही इन परिस्थितियों का दृढ़ता से सामना कर सकते हैं।

मो.शमसुल आजम, बांग्लादेश, आप बांग्लादेश पावर डेवलपमेंट बोर्ड के रिटायर चीफ हैं। उन्होंने कहा कि मैं इस एकेडमी के सिद्धांतों से बहुत प्रभावित हूँ। मुझे यहां की शांति और पवित्रता ने ज्यादा प्रभावित किया है। हमारा वर्तमान समय अनिश्चतता से गुजर रहा है। हमलोग हर कदम पर अनिश्चितता से सामना कर रहे हैं। आज विश्व में इतना न्यूक्लियर हथियार जमा हो गये है जो विश्व को सात बार नष्ट कर सकते हैं। हमारे नेता लोग शांति के लिए दिन-रात प्रयास कर रहे हैं तो दूसरी ओर नये-नये हथियार भी बनते जा रहे हैं हम मेडिटेशन के द्वारा ही विश्व में शांति स्थापन कर सकते हैं। और मैं यहां आकर अपने आपको बहुत ही भाग्यशाली मान रहा हूँ।

जवाहर मेहता - मुझे इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़े हुए ४० वर्ष हो गये हैं। मैंने यहां जो अनुभव पाया है उसके लिए मैं बचपन से ही सोचता था कि जिसका साथी भगवान उसको क्या रोकेगा आंधी-तूफान। भगवान के ऊपर भरोसा रखकर के आप कोई भी कार्य करो तो भगवान मदद करने के लिए बंधा हुआ है।

राजयोगिनी मोहिनी दीदी ने कहा कि बाहर अनिश्चितता की दूनिया है, क्या होगा, कैसे होगा, कहां होगा, हमारा क्या होगा, हमारे परिवार का क्या होगा, समाज का क्या होगा इतनी बड़ी लिस्ट बनाकर रखी हुई है। हम भय में जी रहे हैं, भय में रह रहे हैं। आप देखेंगे कि विश्व में ऐसी कोई जगह नहीं होगी जहां के लोग भय से न जी रहे हो। लेकिन परमात्मा ने हमें दिव्य बुद्धि देकर हमें निशिचिंत बना दिया है। अभी जो वर्तमान का समय चल रहा है वह भी कल्याणकारी है और हम जिस स्थान पर बैठे हैं वह भी कल्याण करने वाला है। परमात्मा सर्व का भाग्यविधाता है, मुक्ति दाता है। मनुष्य जब सब तरफ से हार जाता है तो कहता है कि अब जो कुछ कर सकता है वो ऊपर वाला ही कर सकता है। डॉक्टर भी मरीज को कहता है कि हमें जो करना था सो मैंने वो कर दिया अब हमारे हाथ में कुछ भी नहीं है। अब जो करेगा वह ऊपर वाला ही करेगा। वर्तमान में दुनिया की भी यही हालत है। दुनिया की तीन सत्तायें हैं - धर्म सत्ता, राजनीति सत्ता, और विज्ञान सत्ता। क्या ये सब मिलकर विश्व के अंदर सुख-शांति, संतुष्टता दे सकी हैं, तो जवाब आयेगा नहीं। हम भौतिक रीति से तो उन्नति कर रहे हैं लेकिन उतना ही हम चारित्रक जीवन से, सामाजिक जीवन से नीचे गिरते जा रहे हैं। जब लक्ष्मी-नारायण का राज्य का था तो उनका जीवन कितना उच्च था, वो स्वर्ग कहलाता था। और हम अपने वर्तमान समय में देखें कि हम क्या हैं? इस दूनिया के अंदर बहुत सी बातें अमर्यादा वाली चल रही हैं इसको देखते हुए हम कहते हैं कि ये दूनिया अब कब तक चलेगी। विश्व को परिवर्तन करने से पहले हमें स्वयं को परिवर्तन करना होगा। क्योंकि स्व परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होता है। हमें अपने जीवन में पांच पहेलियां हल करनी हैं वो पहेलियां है - मैं कौन हूँ, मैं कहां से आया हूँ, मैं क्या करने आया हूँ, मैं क्या कर रहा हूँ, मुझे कहां जाना है।